मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में लोक जीवन के विविध आयाम

बलवीर सिंह राठौड़[1] डॉ. राजेश कुमार शर्मा[2]

[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग (कला संकाय) भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर (राजस्थान)

[2]शोध निर्देशक, वरिष्ठ व्याख्याता : हिन्दी विभाग, सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

सारांशः

मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में लोक जीवन के विविध आयाम स्थापित है। बुन्देलखण्ड और ब्रज प्रदेश की मिट्टी की सौंधी गंध है। भाषा और मुहावरे भी मिट्टी की गंध समेटे है। उनके सम्पूर्ण कथा साहित्य में लोक जीवन, लोक विश्वास, लोक अविश्वास, ज्योतिष, मूहुर्त तथा शकुन अपशकुन, लोक मान्यताएँ, लोक संस्कार, लोक मेले, उत्सव, त्योहार, लोक गीत, लोक कलाएँ, लोक रीति रिवाज, ग्रामीण आर्थिक संरचना, नारी संघर्ष, भाषा में आंचलिक मिठास व अनूठी नव्यता, स्थानीय राजनीति, नौटंकी, होली की रौनक और प्रतीक धर्मिता साकार हो उठी है। मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श तथा लोक जीवन की भीनी–भीनी खुशबू है। सम्पूर्ण कथा साहित्य में समूचा उत्तर भारत बोल रहा है। राजेन्द यादव के शब्दों में, ''मैत्रेयी पुष्पा न वक्तव्य देती है न भाषण। वह पात्रों को उठाकर उनके जीवन और परिवेश को पूरी नाटकीयता में देखती है। ..... मुहावरे दार जीवंत और खुरदरी लगने वाली भाषा की गवई ऊर्जा मैत्रेयी पुष्पा का ऐसा हथिया है जो हमें अपने समकालीन कथाकारों में सबसे विशिष्ट और अलग बनाती है।''

परिचयः

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य जीवन को सर्जनात्मकता की दिशा की ओर ले जाता है। निःसन्देह साहित्यकार युग दृष्टा और युग सृष्टा होता है। वह जीवन के सभी पक्षों को स्वयं परखता है तथा भोगता है और उन्हें साहित्य मे स्थान भी देता है। साहित्य मानव चेतना का प्रतिफल है। साहित्य और लोक जीवन का घनिष्ठ संबंध है। भारत की पचहत्तर प्रतिशत जनता गाँवों में निवास करती है। इन्हीं गाँवों में भारत की सभ्यता, संस्कृति व लोक जीवन की झलक मिलती है। महात्मा गाँधी के अनुसार, ''भारत वर्ष की आत्मा गाँवों में निवास करती है।''

मैत्रेयी पुष्पा के शब्दों में, ''मन में गाँव घूमता हैं। इदन्नमम लिखा अब फिर गाँव .....।''

समूचा लोक जीवन मानवीय क्रिया–कलापों के सूत्र को लेकर चलता हैं। ''लोक जीवन अंचल विशेष के समग्र व समेकित संश्लिष्ट जीवन को रूपायित करता हैं। आंचलिकता व लोकतत्व का घनिष्ट संबंध हैं।'' 1

डॉ. सरोजनी रोहतगी के अनुसार, ''लोक संस्कृति किसी देश या जाति की आत्मा हैं। इसके द्वारा समाज के विचार, विश्वास, मान्यताएँ, रूढ़ियाँ, उत्सव, त्योहार, पर्व, वेश–भूषा, अलंकार और जीवन के अनेक आदर्श माने जाते है।'' 2

बीसवीं सदीं के उत्तरार्द्ध की सशक्त महिला कथाकार मैत्रेयी पुष्पा एक क्रान्तिकारी लेखिका है। उनके सम्पूर्ण कथा साहित्य में स्त्री विमर्श तथा ग्रामीण अंचल की आंचलिकता तथा लोक जीवन है। उनके उपन्यास फणीश्वरनाथ 'रेणु' के मैला आँचल व प्रेमचन्द के 'गोदान' के इर्द गिर्द घूमते हैं। जैसे उनके पूरे उपन्यासों में लोक जीवन व आँचलिकता का पुट है।

मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य के केन्द्र में नारी है वह भी ठेठ ग्रामीण नारी हैं जो अशिक्षित, रूढ़िग्रस्त और स्वचेतना से कोसो दूर है। शोषित है, पीड़ित है और संघर्षरत है। अपनी पीड़ा को मिटाने के लिए साथ ही पूरे स्थानीय रंग में रंगी हुई है।

मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में लोक जीवन के विविध आयाम, लोक जीवन का यथार्थ तथा लोक चेतना भरी हैं। आपका समस्त साहित्य सृजन का ताना बाना ग्राम्य जीवन से प्रेरित एवं प्रभावित रहा है। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में समूचा उत्तर भारत का ग्रामीण अंचल साकार हो उठा है। ग्रामीण लोक जीवन, लोक विश्वास, लोक मान्यताएँ, लोक परम्परायें, लोक आचार, व्रत, त्योहार, मेले, उत्सव, जातियता की रंगत, स्थानीय रंग की राजनीति, अन्धविश्वास, लोक कलाएँ, खेल तमाशे, अशिक्षा, ग्रामीण आर्थिक संरचना, भाषा में आंचलिक मिठास व अनुठी नव्यता, सांस्कृतिक व सामाजिक सरोकार साकार हो उठे है। निःसन्देह फणीश्वरनाथ रेणु की आंचलिक परम्परा को आगे बढ़ाने का श्रेय मैत्रेयी पुष्पा को जाता है।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास व कहानी संग्रह है –

उपन्यास

चाक
इदन्नमम
झूलानट
अल्मा कबूतरी
फरिश्ते निकले
त्रियाहट
बेतवा बहती रही
कहीं इसूरी फाग
विजन
अगनपाखी
गुनाह बेगुनाह

कहानी संग्रह

गोमा हँसती है
चिन्हार
ललमनियाँ

मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में लोक जीवन की तीखी गंध है। उनकी कहानियों में ग्रामीण अंचल साकार हो उठा है।

'चाक' उपन्यास मैत्रेयी पुष्पा का सर्वाधिक चर्चित उपन्यास है जिसमें लोक जीवन की भीनी–भीनी खुशबू है। सारंग नायिका है जो नारी जाति का प्रतिनिधित्व करती है। जो स्वतन्त्र जीवन जीना पसंद करती है। चन्दन की विदाई के समय शकुन अपशकुन का यह उदाहरण लोक जीवन की मान्यताओं और लोक विश्वास को बताता है। ''अपनी मुट्ठी में दबाकर राई, नौन, लाल मिर्च ले आई, चलती बेला, लपेटकर बेटे की बराबरी में पहुंची, सात बार उतारा और पिछवाडे की मुट्ठी उछाल दी।'' 3 'चाक' उपन्यास में अन्धविश्वास का उदाहरण दृष्टव्य है। ''लो यह, मंगो दादी ने सलामती का ताबीज दिया था। ..... इसके गले में बांध आना। भूलना नहीं। यही ढाल है यही तलवार है।'' 4 'चाक' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने लोक जीवन में लोक लज्जा का चित्रण भी किया है, ''घूँघट पर्दा में ढकी हुई हूँ मैं। नहीं तो ..... आँखों पर लोभ की पट्टी न बाँधना।'' 5

मैत्रेयी पुष्पा का पहला लगभग क्लासिक उपन्यास 'इदन्नमम' दसवें दशक की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। 'इदन्नमम' के आँचल में छिपा है विंध्य का अंचल। विंध्य की पहाड़ियों से घिरे वर्णित गाँव श्यामली और सोनपुरा के लोक जीवन की जीवंत धड़कनों को यह उपन्यास साँस दर

साँस कहता है। इन गाँवों में लोक जीवन, लोक पर्व, लोक गीत, लोक आहें कराहें है नदी है, धूप है, अंचल में धूल है और सत असत है और हे रूढ़ियों और परम्पराओं की भूरी–पूरी दूनिया। 'इदन्नमम' उपन्यास में तीन नायिकाओं की बऊ (दादी), प्रेम (माँ) और मंदा (उपन्यास की नायिका) की बेहद सहज व संवेदनशील कहानी। 'इदन्नमम' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने मंदा (मंदाकिनी) के माध्यम से ग्रामीण अंचल में किसानों के अधिकारों के लिए संघर्ष का चित्रण किया है, ''राजा साहब जी, बड़ी परेशानी। क्रेशरों के कारण गाँवों में धूल छाया रहती हैं। पहले के मुकाबले दमा, साँस, कई गुना अधिक फैल गये हैं। मजदूरों के ही नहीं, किसानों के शरीर भी हो गये है इन बिमारियों के घर।'' 6
'इदन्नमम' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने लोक जीवन, लोक कला का जीता जागता चित्रण किया है। ''किसी ने गोबर से तो किसी ने पोतनी मिट्टी से। किसी ने सफेद में नीला थोथा मिलाकर पोती है बखरी। ..... चित्रकारी तो एक जैसी है सब भीतों पर।'' 7
'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने बून्देलखण्ड के आस पास के क्षैत्र में विलुप्त होती जनजाति का चित्रण किया है। अल्मा कबूतरी में लोक जीवन, लोक परम्परा, लोक चेतना, लोक मूल्य, आँचलिकता की प्रस्तुति गीतों के माध्यम से प्रस्तुत की है।

''मोरी चन्दा–चकोर, काजर लगा के आ गई भोर ही भोर
मोरी चन्दा चकोर छतिया पै तोता करीहा पै भोर
..... चोली में निबुआ घाघरा घुमेर।'' 8

'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में आँचलिकता, लोक जीवन का पुट, कबूतरा जाति का दामपत्य जीवन, अशिक्षा, विवाह, संस्कार, रहन सहन, धार्मिक विश्वास, लोक गीत की झलक यत्र तत्र सर्वत्र मिलती है।
'बेतवा बहती रही' उपन्यास लोक जीवन का एक सुन्दर दस्तावेज है। बेतवा नदी के किनारे रहने वाले आदिवासी, भाग्यवादी दीन हीन कृषकों के साथ होने वाले शोषण, उनका लोक जीवन, परम्परायें, रूढ़ियाँ, अशिक्षा, यौन विकृतियों, स्त्री अन्याय, स्त्री की त्रासदी की गाथा है। लोक जीवन के मध्य बेतवा नदी का प्राकृतिक सौन्दर्य हृदयस्पर्शी है, ''हहराती लहरों के संग तेजी से बहती निगाह– कोई टिकाव नहीं, ठहराव नहीं। तेज प्रवाह अतीत की स्मृतियों का उमड़ता तूफान।'' 9 भाषा में आँचलिक मिठास व लोक जीवन की अनूठी नव्यता, लोक गीत की गूंज 'बेतवा बहती रही' उपन्यास में हैं –

''कैसे कै दरसन पाऊँ री
माई तेरी सँकरी दुअरिया
माई के दुआरें एक कन्या पुकारै
दैदेउ सजन वर जाऊँ री माई तेरी .....।''

यह लोक गीत लोक जीवन का प्राण तत्व है। यह गीत तो हमारे गाँवों में आज भी गाये जाते है।
'झूलानट' उपन्यास में बुन्देलखण्ड धरोहर, वैभव संस्कृति, परम्पराएँ जनजातीय ग्रामीण विवश महिला की मनोदशा व वस्तु स्थिति की पुनरावृति वाला उपन्यास है। इस उपन्यास में लोक जीवन, आँचलिकता का पुट यत्र तत्र स्पष्ट परिलक्षित है। इस सन्दर्भ में राजेन्द्र यादव ने कहा है, ''झूलानट की शीलों हिन्दी उपन्यास के कुछ न भूले जाने वाले चरित्रों में से एक है।'' 10
'कस्तूरी कुण्डल बसै', 'गुड़िया भीतर गुड़िया' मैत्रेयी पुष्पा के आत्मकथात्मक शैली में लिखित उपन्यास है। जिसमें लेखिका के जीवन संघर्ष की कहानी है। वह स्वयं कहती है, ''यही है हमारी कहानी। मेरी और मेरी माँ की कहानी।'' 11
'गुड़िया भीतर गुड़िया' में मैत्रेयी पुष्पा की ईमानदार, आत्म स्वीकृतियाँ है। जिसमें मैत्रेयी पुष्पा ने बुन्देलखण्ड के आस पास के क्षैत्र के लोक जीवन में व्रत, त्योहार, उत्सवों के महत्वों पर प्रकाश डाला है। वह लिखती है, ''चन्द्रमा व पवित्र जल के आपसी हेल मेल से बना यह करवा चौथ का त्योहार। स्त्रियां, जैसे सबकी दूल्हन। बड़ी बूढ़ी तक सिन्दूर, बिन्दी और मंगलसूत्र के साथ चूड़ियों से सुसज्जित।'' 12
'अगनपाखी' उपन्यास में लोक गीतों, लोक कथाओं, लोक विश्वासों, लोक रूढ़ियों व लोक रीति रिवाजों के माध्यम से अनूठा प्रयोग प्रस्तुत किया है। वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यास 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास की तर्ज पर लिखा है अगनपाखी। ''विजयासिंह की औरत ने देवी का अवतार ले लिया है, कैसा पुनर्जन्म, चुड़ैल योनी में आ गई है। ..... ''नानी ने हमें हरामी का मूत कहा था।'' 13 अगनपाखी में लोक गीतों का सौन्दर्य दृष्टव्य है –

''उठो उठो सूरजमल भइया, भोर भए
उठो उठो चन्दनमल भइया, भोर भए
ना रे सुआटा, मालिनी खड़ी तेरे द्वार
इन्दरगढ़ की मालिनी ना रे सुआटा, हाट ई हाट बिकाय।'' 14

'त्रिया हठ' उपन्यास में लेखिका ने युवा पीढ़ी की मानसिकता का विश्लेषण किया है जिसमें नई विचारधाराओं का पोषण किया है। 'त्रिया हठ' उपन्यास में ग्रामीण परिवेश, लोक जीवन की छटा यत्र तत्र है। उर्वशी केन्द्रीय पात्र है। मीरा की दादी उर्वशी को लोक भाषा में गाली देती है, ''खसम खा लिया, इसका पूत मर जाए। ..... तो अब हमारा ही घर मिला इस डायन को .....।'' 15
मैत्रेयी पुष्पा के औपन्यासिक यात्रा का एक जबरदस्त मोड है 'कही ईसुरी फाग'। नायक ईसुरी है मगर कहानी रजऊ की है। 'कही ईसुरी फाग' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने फागुन का उत्सव तथा अंचल में होने वाले लोक गीतों की धुन तथा संस्कृति की रंग बिरंगी छटा के खिलते फूलों में रजऊ (रज्जो) को एक गुलाब की कली के रूप में प्रस्तुत किया है।
मैत्रेयी पुष्पा ने उपन्यास के साथ बेहतरीन कहानियाँ भी लिखी है उनके तीन कहानी संग्रह हैं – 1. चिन्हार 2. ललमनियां 3 गोमा हँसती है
मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का कलेवर और पात्र ग्रामीण अंचल से उठाये गये है। उनकी कहानियों के केन्द्र में नारी है जो किसी न किसी पीड़ा से पीड़ित है। नारी जो ग्रामीण अंचल से है उसका लोक विश्वास, लोक अविश्वास, लोक रीति रिवाज, अशिक्षा, प्रचलित मान्यताएँ, जातिगत भेदभाव को बखुबी उद्घाटित करती है। ''यातना–यंत्रणाओं का वही रूप मेरे विचार से क्या अंचल, क्या देश में, क्या संसार में, पीड़ा का एक स्वरूप होता है। दर्द की धार एक ही होती है सर्वत्र।'' 16 'चिन्हार', 'अपना–अपना आकाश', 'सफर के बीच', 'मन नाँही दस बीस', 'केतकी', जैसी कहानियां लोक जीवन का प्रतिनिधित्व करती है।
मैत्रेयी पुष्पा का एक महत्वपूर्ण कहानी संग्रह है ललमनियाँ। इसमें 10 कहानियां है।'फैसला' कहानी में ग्रामीण लोक अंचल में अशिक्षित महिलाओं की कथा व्यथा को प्रस्तुत किया है। 'फैसला' कहानी पर टेलीफिल्म पर बसुमती की चिट्ठी प्रसारित हुई है। 'सिस्टर', 'सेंध', 'अब फूल नहीं खिलते', 'रिजक', 'बोझ', 'तुम किसकी हो बिन्नी?' 'ललमनियां जैसी कहानियों में लोक जीवन की तीखी गंध है। ललमनियां कहानी में ललमनियां के सौन्दर्य का उद्घाटन है, ''अरे वो तो अपनी बिरज भूमि का नाच है। ..... उसे तो अटूट पिरैम था इस नाच से।'' 17

'गोमा हँसती है' सिर्फ एक कहानी नहीं, हिन्दी कथा जगत की एक घटना भी है।'' 18 मैत्रेयी पुष्पा अपनी कहन और कथन में अलग नहीं है। भाषा और मुहावरों में भी 'मिट्टी की गंध' समेटे है। इसका उत्कृष्ट उदाहरण है 'गोमा हँसती है'। इसमें दस कहानियां है। 'गोमा हँसती है' कहानी में अंधविश्वास का यह उदाहरण लोक जीवन की गंध को लिये हुए है।

''पाप संका ! नरक होगा। सियाराम भगत के पास बहुत दिनों से गया नहीं। भूल गया पाप–पुण्य।'' 19

''है रे भैंस का दाना? घेर का गोबर कूड़ा? बरदौ का पानी पत्ता? पढ़ैनी के कल्सा–कल्सिया?'' 20 इस कहानी में लोक जीवन की तीखी गंध है।

अध्ययन के निष्कर्ष:

मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में लोक जीवन के विविध आयाम स्थापित है। बुन्देलखण्ड और ब्रज प्रदेश की मिट्टी की सौंधी गंध है। भाषा और मुहावरे भी मिट्टी की गंध समेटे है। उनके सम्पूर्ण कथा साहित्य में लोक जीवन, लोक विश्वास, लोक अविश्वास, ज्योतिष, मूहुर्त तथा शकुन अपशकुन, लोक मान्यताएँ, लोक संस्कार, लोक मेले, उत्सव, त्योहार, लोक गीत, लोक कलाएँ, लोक रीति रिवाज, ग्रामीण आर्थिक संरचना, नारी संघर्ष, भाषा में आंचलिक मिठास व अनूठी नव्यता, स्थानीय राजनीति, नौटंकी, होली की रौनक और प्रतीक धर्मिता साकार हो उठी है। मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श तथा लोक जीवन की भीनी–भीनी खुशबू है। सम्पूर्ण कथा साहित्य में समूचा उत्तर भारत बोल रहा है। राजेन्द यादव के शब्दों में, ''मैत्रेयी पुष्पा न वक्तव्य देती है न भाषण। वह पात्रों को उठाकर उनके जीवन और परिवेश को पूरी नाटकीयता में देखती है। ..... मुहावरे दार जीवंत और खुरदरी लगने वाली भाषा की गवई ऊर्जा मैत्रेयी पुष्पा का ऐसा हथिया है जो हमें अपने समकालीन कथाकारों में सबसे विशिष्ट और अलग बनाती है।''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. डॉ. आनन्द मोहन उपाध्याय : फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का लोकतात्विक अध्ययन, पृ. सं. 60।
2. डॉ. सरोजनी रोहतगी : अवधी का लोक साहित्य, नेशनल पब्लिसिंग हाउस नई दिल्ली, पृ. सं. 276।
3. चाक : मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. सं. 63।
4. चाक : मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. सं. 63।
5. चाक : मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. सं. 57।
6. इदन्नमम : मैत्रेयी पुष्पा, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. सं. 307।
7. इदन्नमम : मैत्रेयी पुष्पा, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. सं. 310।
8. अल्मा कबूतरी : मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. सं. 42।
9. बेतवा बहती रही : मैत्रेयी पुष्पा, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. सं. 09।
10. झूलानट : मैत्रेयी पुष्पा, (भूमिका में राजेन्द्र यादवप का वक्तव्य)।
11. कस्तूरी कुण्डल बसै : मैत्रेयी पुष्पा, भूमिका से।
12. गुड़िया भीतर गुड़िया : मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. सं. 245।
13. अगनपाखी : मैत्रेयी पुष्पा, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. सं. 21।
14. अगनपाखी : मैत्रेयी पुष्पा, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. सं. 24।
15. त्रिया हठ : मैत्रेयी पुष्पा, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. सं. 117।
16. चिन्हार (मैं सोचती हूँ कि) : मैत्रेयी पुष्पा, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. सं. 143।
17. ललमनियाँ : मैत्रेयी पुष्पा, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. सं. 139।
18. गोमा हँसती है : मैत्रेयी पुष्पा, (राजेन्द्र यादव का वक्तव्य)।
19. गोमा हँसती है : मैत्रेयी पुष्पा, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. सं. 189।
20. गोमा हँसती है : मैत्रेयी पुष्पा, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. सं. 175।